

**डॉ.पंजाबराव देशमुख कृषि विद्यापीठ ,अकोला व विभागीय कृषि सहसंचालक नागपूर विभाग
नागपूर यांनी संयुक्तपणे नागपूर विभागातील वर्धा,नागपूर,चंद्रपूर जिल्हयांकरीता मुग पिकाच्या
सुधारीत लागवडीचे शिफारशीत केलेले तंत्रज्ञान**

| अ.क्र | बाब | तपशिल |
|-------|---------------------|---|
| १ | जमिनीची पुर्व मशागत | <ul style="list-style-type: none"> ➤ मुंग पिकांच्या जमिनीची नांगरणी खोल करावी. नांगरणीनंतर वर्खराच्या दोन ते तीन पाळ्या देऊन जमिन तयार करावी. प्रति हेक्टरी ५ ते १० टन शेणुखत किंवा कंपोस्ट खत व शेवटची वर्खराची पाळीच्या वेळेस जमिनीत खते मिसळून द्यावी. |
| २ | वाण निवड | <ul style="list-style-type: none"> ➤ मध्यम जमीनीत व मध्यम पावसाच्या कोपरगाव, टीएआरएम १८, पीकेव्ही ग्रीनगोल्ड (एकेम-१९११) पुसा वैशाखी व पीकेव्ही एकेम-४ मुगाचा दाण्यांचा रंग भुरकट हिरवा वाणांची निवड करावी. ➤ हे वाण अधिक उत्पन्न देणारी आणि भुरी रोगास साधारण प्रतिकारक्षम आहे. |
| ३ | लागवड पद्धती | <ul style="list-style-type: none"> ➤ मान्सुनचा पुरेसा पाऊस (७५ ते १०० मि.मी.) झाल्यानंतर ते जुनचा शेवटचा आठवडा दरम्यान पेरणी करावे.दोन ओळीतील अंतर ३० सें.मी. व झाडामधील अंतर १० सें.मी. ठेवून खरीप मुग या पिकाची पेणी पाभरीने करावी. |
| ४ | खतव्यवस्थापन | <ul style="list-style-type: none"> ➤ माती परिक्षणावर आधारीत शिफारस केलेल्या खत मात्रेचा वापर करावा. मुग पिकाला २० किलो नव्र व ४० किलो स्फुरद प्रति हेक्टर पेरणीच्या वेळेस जमीनीत गाडून द्यावे. मुगाचे अधिक आर्थिक मिळकतीकरिता रासायनिक खतास पर्याय म्हणुन २ ते ५ टन शेणुखत प्रति हेक्टरी दवावे. |
| ५ | पिकसंरक्षण | <p>रसशोषण करणा-या किडी :-</p> <ul style="list-style-type: none"> ➤ मावा :- मूग पिकावर रसशोषण करणा-या किडी असतात. उदा. मावा, तुडतुडे फुलकिडे पांढरी माशी यांच्या नियंत्रणाकरीता डायमिथोएट ३० टक्के प्रवाही १० मि.ली. किंवा मॅलथिअॅन ५० टक्के प्रवाही १० मि.ली. किंवा मोनोक्रोटोफॉस ३६ टक्के प्रवाही ११ मि.ली. किंवा थायोमेटान २५ टक्के प्रवाही ८ मि.ली. प्रति १० लिटर पाण्यात मिसळून फवारणी करावी. ➤ मुग पिकावर पाने खाणा-या अळ्या :- १.तंबाखुवरील पाने खाणारी अळी, २.हिरवी उंट अळी, ३.पाने खाणारी स्फंजीड अळी ➤ व्यवस्थापन :- सुरवातीच्या काळात ५ टक्के निंबोळी अर्काची फवारणी करावी. पिकावरील अंडी अवस्था विशेषत: स्पोडोप्टेरा व मोठ्या अळ्या वेचून नष्ट कराव्यात. पाने खाणा-या अळ्यांचा प्रादुर्भाव वाढल्यास मॅलाथिअॅन ५० टक्के प्रवाही १० मि.ली. अथवा क्लोरोपायरीफॉस २० टक्के प्रवाही २० मि.ली.प्रती १० लिटर पाण्यात मिसळून फवारणी करावी. ➤ मुगावरील किडींचे एकात्मीक व्यवस्थापन :- मुग पिकावरील व्यवस्थापनेसाठी ईमिडाक्लोरोप्रीड ६०० एफ. एस. या किटकनाशकाची ५ मि.ली. व ट्रायकोर्डमा या जैविक बुरशीनाशकाची ४ ग्रॅम प्रति किलो या प्रमाणात बोज प्रक्रिया करावी. बी उगवणीनंतर ३० दिवसांनी अझॉडिरेक्टीन १०००० पीपीएम १० मि.ली. प्रति १० लिटर पाणी तर पीक उगवणनंतर ४५ दिवसानी प्रोफेनोफॉस ५० इंसी २५ मि.ली. प्रति १० लिटर पाण्यात मिसळून फवारणी करावी. |

| | | रोगाचे व्यवस्थापन :- | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|--------|----------------------------------|--|--------|-----|---------------------------|---|----------|-----|---|------------------|-----|---|----------------------------------|-----|---|-------------------------|-----|---|-------------------------------|-----|---|-----------------------|----|---|---------------------------|-----|
| | | <ul style="list-style-type: none"> ➤ भुरी :- पानावर पांढ-या रंगाची बुरशी आढळून येते. रोगाची तिक्रता जास्त असल्यास बुरशी संपुर्ण पानावर, फांद्यावर व फुलांवर पसरते व पाने, फुले गळून पडतात आणि उत्पत्रात घट येते. यांच्या नियंत्रणासाठी पेन्कोनोझोल ५ मि.ली. किंवा डिनोकॅप १० मि.ली १० लीटर पाण्यात मिसळून फवारणी करावी. ➤ मुळकुज :- मुळकुज लागण झालेली झाडे पिवळी पडून वाळतात व झाडे उपटून पाहल्यास मुळाचा भाग कुजलेला दिसतो. यांच्या नियंत्रणासाठी पेरणीसाठी रोगमुक्त बियाणे वापरावे. पेरणीपुर्वी बियाण्यास थायरम ३ ग्रॅम व ट्रायकोडर्मा या जैविकाची ४ ग्रॅम प्रति किलो या प्रमाणात बीज प्रक्रिया करावी. | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| ६ | सिंचन | <ul style="list-style-type: none"> ➤ मुग पिकाला शक्यतोवर ओलीताची आवश्यकता भासत नाही. | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| ७ | काढणी तंत्रज्ञान | <ul style="list-style-type: none"> ➤ शेतीच्या यांत्रीकीकरणामध्ये ट्रॅक्टरचा मोठा सहभाग आहे. त्याकरीता कोरडवाहु शेतीमध्ये विविध पिकांच्या पद्धतीप्रमाणे पेरणी ते कापणीकरीता ट्रॅक्टर योग्य आहे. | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| ८ | काढणी पश्चात तंत्रज्ञान | <ul style="list-style-type: none"> ➤ या पिकाच्या ८० ते ८५ टक्के शेंगा वाळल्यानंतर पिकाची कापणी करावी व पेंडया बांधून ठेवाव्यात. कापणीस उशिर झाल्यास शेंगा तडकण्याची भिती असते. पेंडया दोन ते तिन दिवस उन्हात वाळवल्या नंतर मळणी यंत्राव्दरे मळणी करावी. त्यानंतर उपणनी करून दाणे अलग करावे. | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | <ul style="list-style-type: none"> ➤ धान्याची गुणवत्ता राखण्यासाठी आवश्यक निकष आहेत. | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | <table border="1"> <thead> <tr> <th>अ.क्र.</th> <th>घटक</th> <th>जास्तीत जास्त मर्यादा (%)</th> </tr> </thead> <tbody> <tr> <td>१</td> <td>काडीकचरा</td> <td>२ %</td> </tr> <tr> <td>२</td> <td>मिश्रणयुक्त दाणे</td> <td>३ %</td> </tr> <tr> <td>३</td> <td>पुर्ण किडग्रस्त खराब झालेले दाणे</td> <td>३ %</td> </tr> <tr> <td>४</td> <td>थोडे हानी झालेले बियाणे</td> <td>४ %</td> </tr> <tr> <td>५</td> <td>अंकुरण झालेले, आकसलेली बियाणे</td> <td>३ %</td> </tr> <tr> <td>६</td> <td>किडग्रस्त झालेले दाणे</td> <td>४%</td> </tr> <tr> <td>७</td> <td>दाण्यातील आद्रतेचे प्रमाण</td> <td>१२%</td> </tr> </tbody> </table> | अ.क्र. | घटक | जास्तीत जास्त मर्यादा (%) | १ | काडीकचरा | २ % | २ | मिश्रणयुक्त दाणे | ३ % | ३ | पुर्ण किडग्रस्त खराब झालेले दाणे | ३ % | ४ | थोडे हानी झालेले बियाणे | ४ % | ५ | अंकुरण झालेले, आकसलेली बियाणे | ३ % | ६ | किडग्रस्त झालेले दाणे | ४% | ७ | दाण्यातील आद्रतेचे प्रमाण | १२% |
| अ.क्र. | घटक | जास्तीत जास्त मर्यादा (%) | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| १ | काडीकचरा | २ % | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| २ | मिश्रणयुक्त दाणे | ३ % | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| ३ | पुर्ण किडग्रस्त खराब झालेले दाणे | ३ % | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| ४ | थोडे हानी झालेले बियाणे | ४ % | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| ५ | अंकुरण झालेले, आकसलेली बियाणे | ३ % | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| ६ | किडग्रस्त झालेले दाणे | ४% | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| ७ | दाण्यातील आद्रतेचे प्रमाण | १२% | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

तंत्र अधिकारी
विस्तार

विभागीय अधिक्षक कृषि अधिकारी
नागपूर विभाग, नागपूर

उपर्युक्तक(सामेती)
नागपूर विभाग, नागपूर

कृषि विद्यावेत्ता
कृषि महाविद्यालय, नागपूर
डॉ. पं. दे. कृ. वि. अकोल

विभागीय कृषि सहसंचालक,
नागपूर विभाग, नागपूर

**डॉ.पंजाबराव देशमुख कृषि विद्यापीठ ,अकोला व विभागीय कृषि सहसंचालक नागपूर विभाग
नागपूर यांनी संयुक्तपणे नागपूर विभागातील वर्धा,नागपूर,चंद्रपूर जिल्ह्यांकरीता उडीद पिकाच्या
सुधारीत लागवडीचे शिफारशीत केलेले तंत्रज्ञान**

| अ.क्र. | बाब | तपशिल |
|--------|---------------------|---|
| १ | जमिनीची पुर्व मशागत | ➤ उडीद पिकांच्या जमिनीची नांगरणी खोल करावी. नांगरणीनंतर वखराच्या दोन ते तीन पाळया देऊन जमिन तयार करावी. प्रति हेक्टरी ५ ते १० टन शेणखत किंवा कंपोस्ट खत व शेवटची वखराची पाळीच्या वेळेस जमीनीत खते मिसळून द्यावी. |
| २ | वाण निवड | ➤ मध्यम जमीनीत व मध्यम पावसाच्या ठिकाणी टीएयू – १ या जाड वाणाची निवड करावी. हे वाण अधिक उत्पन्न देणारे आणि भुरी रोगास साधारण प्रतिकारक्षम आहे. तसेच टी -९, टीएयू-२, टीपीयू-४, पीकेव्ही उडीद १५, पीकेव्ही ब्लॅक गोल्ड या अधिक उत्पन्न देणा-या जाती आहेत. भुरी रोगास साधारण प्रतिकारक्षम आहे. |
| ३ | लागवड पध्दती | ➤ मान्सुनचा पुरेसा पाऊस (७५ ते १०० मि.मी.) झाल्यानंतर ते जुनचा शेवटचा आठवडा दरम्यान पेरणी करावे. दोन ओळीतील अंतर 30×10 सें.मी. |
| ४ | खतव्यवस्थापन | ➤ माती परिक्षणावर आधारीत शिफारस केलेल्या खत मात्रेचा वापर करावा.उडीद पिकाला २० किलो नत्र व ४० किलो स्फुरद प्रति हेक्टर पेरणीच्या वेळेस जमीनीत गाडून द्यावे. मुगाचे अधिक आर्थिक मिळकतीकरीता रासायनिक खतास पर्याय म्हणून २ ते ५ टन शेणखत प्रति हेक्टरी दयावे. |
| ५ | पिकसंरक्षण | <p>रसशोषण करणा-या किडी :-</p> <p>➤ उडीद पिकांवर रसशोषण करणा-या किडी असतात. उदा. मावा, तुडतुडे फुलकिडे पांढरी माशी यांच्या नियंत्रणाकरीता डायमिथोएट ३० टक्के प्रवाही १० मि.ली. किंवा मॅलथिथॉन ५० टक्के प्रवाही १० मि.ली. किंवा मोनोक्रोटोफॉस ३६ टक्के प्रवाही ११ मि.ली. किंवा थायोमेटान २५ टक्के प्रवाही ८ मि.ली. प्रति १० लिटर पाण्यात मिसळून फवारणी करावी.</p> <p>➤ उडीद पिकावर पाने खाणा-या अळया :- १.तंबाखुवरील पाने खाणारी अळी, २.हिरवी उंट अळी, ३.पाने खाणारी स्फिंजीड अळी</p> <p>➤ व्यवस्थापन :- सुरवातीच्या काळात ५ टक्के निंबोळी अर्काची फवारणी करावी. पिकावरील अंडी अवस्था विशेषत: स्पोडोएट्रा व मोठया अळया वेचून नष्ट कराव्यात. पाने खाणा-या अळयांचा प्रादुर्भाव वाढल्यास मॅलथिथॉन ५० टक्के प्रवाही १० मि.ली. अथवा क्लोरोपायरोफॉस २० टक्के प्रवाही २० मि.ली.प्रती १० लिटर पाण्यात मिसळून फवारणी करावी.</p> <p>➤ उडीदावरील किडींचे एकात्मीक व्यवस्थापन :- उडीद पिकावरील व्यवस्थापनेसाठी ईमिडाक्लोरोप्रीड ६०० एफ.एस. या किटकनाशकाची ५ मि.ली. व ट्रायकोर्डमा या जैविक बुरशीनाशकाची ४ ग्रॅम प्रति किलो या प्रमाणात बीज प्रक्रिया करावी.पीक उगवणीनंतर ३० दिवसांनी अझॉडिरेक्टीन १०००० पीपीएम १० मि.ली. प्रति १० लिटर पाणी तर पीक उगवणनंतर ४५ दिवसांनी प्रोफेनोफॉस ५० ईसी २५ मि.ली. प्रति १० लिटर पाण्यात मिसळून फवारणी करावी.</p> |

| | | <p>रोगाचे व्यवस्थापन :-</p> <ul style="list-style-type: none"> ➤ भुरी :- पानावर पांढ-या रंगाची बुरशी आढळून येते. रोगाची तिक्रता जास्त असल्यास बुरशी संपुर्ण पानावर, फांद्यावर व फुलावर पसरते व पाने, फुले गळून पडतात व उत्पन्नात घट येते. यांच्या नियंत्रणासाठी पेन्कोनोझोल ५ मि.ली. किंवा डिनोकॅप १० मि.ली १० लीटर पाण्यात मिसळून फवारणी करावी. ➤ मुळकुज :- मुळकुज लागण झालेली झाडे पिवळी पडून वाळतात व झाडे उपटून पाहल्यास मुळाचा भाग कुजलेला दिसतो. यांच्या नियंत्रणासाठी पेरणीसाठी रोगमुक्त बियाणे वापरावे. पेरणीपुर्वी बियाण्यास थायरम ३ ग्रॅम व ट्रायकोडर्मा या जैविकाची ४ ग्रॅम प्रति किलो या प्रमाणात बीज प्रक्रिया करावी | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|--------|----------------------------------|---|--------|-----|---------------------------|---|----------|-----|---|------------------|-----|---|----------------------------------|-----|---|-------------------------|-----|---|--------------------------------|-----|---|-----------------------|----|---|---------------------------|-----|
| ६ | सिंचन | <ul style="list-style-type: none"> ➤ उडीदाला शक्यतोवर ओलीताची आवश्यकता भासत नाही. | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| ७ | यांत्रीकीकरण | <ul style="list-style-type: none"> ➤ शेतीच्या यांत्रीकीकरणामध्ये ट्रॅक्टरचा मोठा सहभाग आहे. त्याकरीता कोरडवाहु शेतीमध्ये विविध पिकांच्या पद्धतीप्रमाणे पेरणी ते कापणीकरीता ट्रॅक्टर योग्य आहे. | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| ८ | काढणी तंत्रज्ञान | <ul style="list-style-type: none"> ➤ या पिकाच्या ८० ते ८५ टक्के शेंगा वाळल्यानंतर पिकाची कापणी करावी व पेंडया बांधून ठेवाव्यात. कापणीस उशिर झाल्यास शेंगा तडकण्याची भिती असते. पेंडया दोन ते तिन दिवस उन्हात वाळवल्या नंतर मळणी यंत्राव्दरे मळणी करावी. त्यानंतर उपणनी करून दाणे अलग करावे. | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| ९ | काढणी पश्चात तंत्रज्ञान | <ul style="list-style-type: none"> ➤ धान्याची गुणवत्ता राखण्यासाठी आवश्यक निकष आहेत. | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | <table border="1"> <thead> <tr> <th>अ.क्र.</th> <th>घटक</th> <th>जास्तीत जास्त मर्यादा (%)</th> </tr> </thead> <tbody> <tr> <td>१</td> <td>काडीकचरा</td> <td>२ %</td> </tr> <tr> <td>२</td> <td>मिश्रणयुक्त दाणे</td> <td>३ %</td> </tr> <tr> <td>३</td> <td>पुर्ण किडग्रस्त खराब झालेले दाणे</td> <td>३ %</td> </tr> <tr> <td>४</td> <td>थोडे हानी झालेले बियाणे</td> <td>४ %</td> </tr> <tr> <td>५</td> <td>अंकुरण झालेले , आकसलेली बियाणे</td> <td>३ %</td> </tr> <tr> <td>६</td> <td>किडग्रस्त झालेले दाणे</td> <td>४%</td> </tr> <tr> <td>७</td> <td>दाण्यातील आद्रतेचे प्रमाण</td> <td>१२%</td> </tr> </tbody> </table> | अ.क्र. | घटक | जास्तीत जास्त मर्यादा (%) | १ | काडीकचरा | २ % | २ | मिश्रणयुक्त दाणे | ३ % | ३ | पुर्ण किडग्रस्त खराब झालेले दाणे | ३ % | ४ | थोडे हानी झालेले बियाणे | ४ % | ५ | अंकुरण झालेले , आकसलेली बियाणे | ३ % | ६ | किडग्रस्त झालेले दाणे | ४% | ७ | दाण्यातील आद्रतेचे प्रमाण | १२% |
| अ.क्र. | घटक | जास्तीत जास्त मर्यादा (%) | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| १ | काडीकचरा | २ % | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| २ | मिश्रणयुक्त दाणे | ३ % | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| ३ | पुर्ण किडग्रस्त खराब झालेले दाणे | ३ % | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| ४ | थोडे हानी झालेले बियाणे | ४ % | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| ५ | अंकुरण झालेले , आकसलेली बियाणे | ३ % | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| ६ | किडग्रस्त झालेले दाणे | ४% | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| ७ | दाण्यातील आद्रतेचे प्रमाण | १२% | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

तंत्र अधिकारी
विस्तार

विभागीय अधिक्षक कृषि अधिकारी
नागपूर विभाग, नागपूर

उपसंचालक(सामेती)
नागपूर विभाग, नागपूर

कृषि विद्यावेत्ता
कृषि महाविद्यालय, नागपूर
डॉ. प. दे. कृ. वि. अकोला

विभागीय कृषि सहसंचालक,
नागपूर विभाग, नागपूर